"शिक्षा का उद्देश्य"
==========

ए. एस. बलगीर
दिनांक: 13.6.1988.

सभी समाजों की मर्यादा, रीति-रिवाज होते हैं । समाज का प्रत्येक सदस्य इनमें रहकर जीता और मरता है ।

हर मनुष्य में इन्सान और शैतान छुपा होता है । इन्सान सारी उम्र सत्य का रास्ता अपनाता है और किसी को धोखा नहीं देता । अपना कार्य करने से पहले दूसरों के हित के लिए सोचता है । ना खुद झूठ बोलता है और यदि अनजाने में गलती हो जाये तो जल्दी ही क्षमा मांगता है । जब दूसरा गलती कर रहा होता है तो उसे जल्दी मना करता है और डटकर विरोध भी करता है । डर व शर्म के मारे कायरों की तरह छुप कर नहीं बैठता और बहादुरी से हर मुश्किल का सामना करता है ।

शैतान हमेशा गलत कार्य करके खुश होता है और अपने स्वार्थ के सिवाय किसी का भला नहीं सोचता । दूसरों के साथ हेरा-फेरी, चालाकी व दुःखी करके मूर्ख बनाना अपना धर्म समझता है ।

शिक्षा का उद्देश्य स्कूल, कालेज व विश्वविद्यालय जाने तक ही सीमित नहीं है । शिक्षा देने का अर्थ है कि मनुष्य पढ़ने लिखने के बाद अपनी अच्छी आदतें दिखाये और मर्यादा में रह कर एक सभ्य और इज्जत से जीवन गुजारे । यदि कोई पढ़ा-लिखा मनुष्य ऐसा नहीं करता तो उसे जानवर के बराबर ही समझा जायेगा ।

इतिहास में तुगलक नाम का बादशाह पढ़ने का बहुत शौकीन था और सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा माना जाता है । जब वह राजगद्दी पर बैठा तो उसने सारी उम्र ऐसे कार्य किये जिसे देखकर कोई खुश न हुआ । जनता अब तक भी उसको "पढ़ा लिखा बेवकूफ बादशाह" कह कर पुकारती है ।

हमारे जीवन का पढ़-लिख कर यह उद्देश्य है कि हमारे कार्य इतने अच्छे और सभ्य हों कि दूसरों को हमारे व्यवहार और कार्यों से ही पता चल जाये कि हम पढ़े - लिखे हैं । इन्सान बनना किसी-किसी को आता है मगर शैतान हर कोई बनकर जी सकता है । इन्सान उस समय मूर्ख बन जाता है जब उसकी शराफत और इन्सानियत का शैतान अपने प्यार और जजबात में फंसा कर नाजायज लाभ उठाता है, उंगलियों पर नचाता है और वह शैतान के पीछे लग कर गलत रास्ते पर चल पड़ता है ।